Self Respect

11-09-2014

❖मीठे-मीठे रूहानी बच्चे, अब दूरदेश के रहने वाले फिर दूर देश के पैसेन्जर्स हो । हम आत्मायें हैं और अभी बहुत दूरदेश जाने का पुरूषार्थ कर रहे हैं । यह सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो कि हम आत्मायें दूरदेश की रहने वाली है और दूरदेश में रहने वाले बाप को भी बुलाते हैं कि आकरके हमको भी वहाँ दूरदेश में ले जाओ । अब दूरदेश का रहने वाला बाप तुम बच्चों को वहाँ ले जाते हैं । तुम रूहानी पैसेन्जर्स हो क्योंकि इस शरीर के साथ हो ना । रूह ही ट्रवेलिंग करेगी । शरीर तो यहाँ ही छोड़ देगी । बाकी रूह ही ट्रवेलिंग (यात्रा) करेगी । रूह कहा जायेंगी? अपने रूहानी दुनिया में ।

❖अभी यहाँ तुम पढ़ रहे हो, जानते हो भगवान् शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं । भगवान् तो सिवाए इस पुरूषोत्तम संगमयुग के कभी पढ़ायेंगे नहीं । सारे 5 हजार वर्ष में निराकार भगवान बाप एक ही बार आकर पढ़ाते हैं । यह तो तुमको पक्का निश्चय है ।

❖ मुक्तिधाम में जाना तो सब चाहते हैं परन्तु उसका भी अर्थ नहीं समझते हैं । मनुष्यों की बुद्धि इस समय कैसी है और तुम्हारी बुद्धि अभी कैसी बनी है, कितना फर्क है । तुम्हारी है स्वच्छ बुद्धि, नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार । सारे विश्व के आदि-मध्य- अन्त का नॉलेज तुमको अच्छी तरह है । तुम्हारे दिल में यह है कि हमको अब पुरूषार्थ कर नर से नारायण जरूर बनना है ।

❖उस नई दुनिया सतयुग में बगुला कोई भी होता नहीं । बाप तो आते ही हैं बगुलों के बीच । फिर तुमको हंस बनाते हैं । तुम अब हंस बने हो, मोती ही चुगते हो । सतयुग में तुमको यह रत्न नहीं मिलेंगे । यहाँ तुम यह ज्ञान रत्न चुग कर हंस बनते हो । बगुले से तुम हंस कैसे बनते हो, यह बाप बैठ समझाते हैं । अभी तुमको हंस बनाते हैं । देवताओं को हंस, असुरों को बगुला कहेंगे । अभी तुम किचड़ा छुड़ाए मोती चुगाते हो ।

❖तुमको ही पद्मापद्म भाग्यशाली कहते हैं । तुम्हारे पैर में छापा लगता है पद्मों का । शिवबाबा को तो पांव हैं नहीं जो पद्म हो सकें । वह तो तुमको पद्मापद्म भाग्यशाली बनाते हैं । बाप कहते हैं मैं तुमको विश्व का मालिक बनाने आया हूँ । यह सब बातें अच्छी रीति समझने की हैं । मनुष्य यह तो समझते हैं ना स्वर्ग था । परन्तु कब था फिर कैसे होगा, वह पता नहीं है । तुम बच्चे अभी रोशनी में आये हो । वह सब हैं अन्धियारे में ।

❖वास्तव में सतगुरू अक्षर ही राइट है । तुम सबसे राइट अक्षर फिर भी सिक्ख लोग बोलते हैं । बड़ी-बड़ी आवाज से कहते हैं-सतगुरू अकाल । बड़ी जोर से धुन लगाते हैं, सतगुरू अकाल मूर्त कहते हैं । मूर्त ही नहीं हो तो वह फिर सतगुरू कैसे बनेंगे, सद्गति कैसे देंगे? वह सतगुरू स्वयं ही आकर अपना परिचय देते हैं-मैं तुम्हारे मिसल जन्म नहीं लेता हूँ । और तो सब शरीरधारी बैठ सुनाते हैं । तुमको अशरीरी रूहानी बाप बैठ समझाते हैं । रात-दिन का फर्क है ।

❖तुम आधाकल्प पुजारी बने फिर आधाकल्प के लिए पूज्य बनते हो । पवित्र कैसे बनो, उसके लिए कितना सहज समझाया जाता है । फिर भक्ति बिल्कुल छूट जाती है । वह सब भक्ति कर रहे हैं, तुम ज्ञान ले रहे हो । वह रात में है, तुम दिन में जाते हो अर्थात् स्वर्ग में ।

❖सारी आयु गीता पढ़ते आये हैं, कुछ भी नहीं समझते । अब वही गीता का भगवान् बैठ सिखलाते हैं तो पतित से पावन बन जाते हैं । अभी हम भगवान से गीता सुनते हैं फिर औरों को सुनाते हैं, पावन बनते हैं ।

❖बाप के महावाक्य हैं ना - यह है वही सहज राजयोग । मनुष्य कितने अन्धश्रद्धा में डूबे हुए हैं, तुम्हारी तो बात ही नहीं सुनते हैं । ड्रामा अनुसार उन्हों की भी जब तकदीर खुले तब ही आ सकें, तुम्हारे पास । तुम्हारे जैसी तकदीर और कोई धर्म वालों की नहीं होती । बाप ने समझाया है यह तुम्हारा देवी-देवता धर्म बहुत सुख देने वाला है । तुम भी समझते हो-बाप ठीक कहते हैं ।

❖अब बाप कहते हैं-बच्चे, मुझे याद करते हो? ऐसे कभी सुना कि बाप बच्चे को कहे कि तुम मुझे याद करो । लौकिक बाप कभी ऐसे याद कराने का पुरूषार्थ कराते हैं क्या? यह बेहद का बाप बैठ समझाते हैं । तुम सारे विश्व के आदि-मध्य- अन्त को जानकर चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे ।

❖वहाँ तो है ही स्वर्ग । तुमको सब कुछ नया मिलेगा । नई दुनिया में सब कुछ नया, अकीचार (अथाह) धन था । अभी तो देखो हर एक चीज कितनी मंहगी हो गई है । अभी तुम बच्चों को मूलवतन से लेकर सब राज समझाया है । मूलवतन का राज बाप बिगर कौन समझायेंगे ।

❖अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमोर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।

❖वरदान: चारों ही सबजेक्ट में बाप के दिलपसन्द मार्क्स लेने वाले दिलतख्तनशीन भव !